Unit - 2

* परामर्श की बुनियादी समझ (Fundamentals of Counseling)

*** Introduction -:** व्यक्ति के समक्ष किसी न किसी प्रकार की समस्याओं का उत्पन्न होना स्वाभाविक है। ये समस्याएं किसी भी क्षेत्र से जुड़ी हो सकती हैं परन्तु प्रत्येक व्यक्ति समस्या - समाधान की प्रक्रिया के उपरांत ही आगे बढ़ता है। इन समस्याओं के समाधान में सहायता प्रदान करने हेतु परामर्श सेवा का महत्वपूर्ण स्थान होता है।

प्राचीन समय में परामर्श सेवाओं को विद्यालय के शिक्षकों एवं समाज के बड़े - बुजुर्गों द्वारा सम्पन्न किया जाता था, परन्तु वर्तमान समय में समाज के स्वरूप में जटिलता के कारण व्यक्ति के पग - पग पर अनेक प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं जिनका समाधान करना जटिल हो गया है, अतः समस्याओं के स्वरूप के आधार पर अधिक योग्य कुशल एवं प्रशिक्षित विशेषज्ञों की आवश्यकता पड़ती है ताकि व्यक्ति के जीवन से जुड़ी विभिन्न पहलुओं की समस्याओं का समाधान करने की योग्यता प्रदान कर उसे जीवन लक्ष्यों को प्राप्त करने योग्य बनाया जा सके।

* परामर्श की अवधारणा (Concept of Counseling) -:

परामर्श एक प्राचीन शब्द है, जिसका आशय पूछताछ करना, पारस्परिक तर्क वितर्क करना अथवा विचारों का पारस्परिक विनिमय है।

परामर्श के आशय के संदर्भ में एक विशिष्ट पक्ष यह भी है कि परामर्श की प्रक्रिया के द्वारा परामर्श प्राप्तकर्ता अथवा सेवार्थी पर किसी निर्णय को थोपा नहीं जाता है बल्कि उसकी सहायता इस प्रकार से की जाती है कि वह व्यक्ति स्वयं निर्णय लेने योग्य बन जाये।

तथा वह अपने जीवन के विभिन्न पहलुओं या आनेवाली समस्याओं का समाधान कर सके।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाये तो सामाजिक समस्यायें काफी जटिल हो गई हैं उनका स्वरूप भी काफी जटिल हो गया है, अतः समस्याओं के जटिलता को देखते हुए जगह-जगह परामर्श केंद्रों की स्थापना की गई है जिनके माध्यम से व्यक्ति की जटिल से जटिल समस्याओं का समाधान एक कुशल, प्रशिक्षित परामर्शदाता के माध्यम से इस प्रकार किया जाता है कि वह स्वयं समस्या समाधान की योग्यता प्राप्त कर सके।

परामर्श का अर्थ (Meaning of counselling) :-

सामान्य शब्दों में परामर्श का अर्थ होता है - सलाह लेना या पूछताछ करना होता है।
अर्थात् परामर्श पारस्परिक रूप से सिखने की प्रक्रिया है तथा इसके अंतर्गत दो व्यक्ति सम्मिलित होते हैं, एक सहायता प्राप्तकर्ता और दूसरा वह व्यक्ति जो इस प्रथम व्यक्ति की सहायता इसप्रकार से करता है कि उसका अधिकतम विकास हो सके तथा वह स्वयं निर्णय लेने की क्षमता अपने अंदर ला सके।

अतः परामर्श ऐसी प्रक्रिया है जिसमें परामर्श लेने वाले को प्रत्यक्ष एवं व्यक्तिगत रूप से सहायता प्रदान कि जाती है।

परामर्श की परिभाषा :-

एडमण्ड विलियमसन के अनुसार :- "परामर्श एक प्रकार का ऐसा समाधान है जिसके आधार पर सेवार्थी को अपनी समस्याओं का समाधान करने से संबंधित अधिगम होता है"

* **हेरिसन के शब्दों में** :- "एक परामर्श साक्षात्कार व्यक्ति से व्यक्ति का संबंध है जिसमें एक व्यक्ति अपनी समस्याओं तथा आवश्यकताओं के साथ, दूसरे व्यक्ति के पास सहायता हेतु जाता है।"

* **कार्ल रोजर्स के अनुसार** :- "परामर्श एक निर्धारित रूप से स्वीकृत ऐसा संबंध है जो परामर्शप्रार्थी को स्वयं को समझने में पर्याप्त सहायता देता है, जिसे वह अपने नवीन ज्ञान के उपयोग से निर्णय ले सके।"

* **परामर्श की विशेषताएँ (characteristics of counselling)**

अलग-अलग विद्वानों के परिभाषाओं के आधार पर परामर्श की निम्नलिखित विशेषताएँ है —

(1) परामर्श की प्रक्रिया दो व्यक्तियों के पारस्परिक सम्बंध पर आधारित है।

(2) प्रत्येक परामर्श दाता को अपनी प्रक्रिया का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए।

(3) प्रत्येक परामर्श साक्षात्कार पर आधारित होता है।

(4) परामर्श में एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के समस्याओं के समाधान हेतु इस प्रकार से सहायता करता है कि वह स्वयं निर्णय ले सके।

(5) परामर्श की प्रक्रिया केंद्रित होती है जिसमें पारस्परिक विचार-विमर्श, वार्तालाप तथा सौहार्दपूर्ण तर्क वितर्क के आधार पर प्रार्थी को इस योग्य बनाया जाता है कि अपनी समस्या का समाधान स्वयं कर सके।

(6) परामर्श वैयक्तिक सहायता प्रदान की प्रक्रिया है इसे सामूहिक रूप में सम्पादित नहीं किया जा सकता है।

(7) परामर्श एक प्रशिक्षित व्यक्ति का व्यावसायिक कार्य है।

(8) परामर्श की प्रक्रिया निर्देशील अधिक होती है, इसमें प्रार्थी के संबंध में संपूर्ण तथ्यों का संकलन करके संबंधित अनुभवों पर बल दिया जाता है।

* परामर्श की आवश्यकता (Need of counselling) :-

(1) छात्रों की योग्यताओं और क्षमताओं का ज्ञान कराने और उनका उचित दिशा में विकास करने के लिए परामर्श की आवश्यकता पड़ती है।

(2) व्यक्ति के शिक्षा संस्थानों, व्यावसायिक स्थलों में संतोषजनक समायोजन में मार्गदर्शन करने के लिए परामर्श की आवश्यकता पड़ती है।

(3) व्यक्ति को विद्यालय जीवन से लेकर गृहस्थ जीवन में अनेक समस्याओं का सामना करना होता है। इन समस्याओं के कारणों को समझ कर उनके समाधान के लिए परामर्श की आवश्यकता होती है।

(4) विद्यालय में पाठ्यक्रम तथा पाठ्य सहगामी क्रियाओं के चयन में उत्पन्न होने वाली समस्याओं के चयन में परामर्श सहायक होता है।

(5) आगे शिक्षा का निर्णय और प्रवेश के लिए उपयुक्त विद्यालयों के चयन में परामर्श की आवश्यकता होती है।

(6) विभिन्न व्यवसायों तथा उनमें प्रगति हेतु भी परामर्श आवश्यक होता है।

(7) कुसमायोजन की स्थिति में भी परामर्श आवश्यक होता है।

(8) व्यक्ति को अपने स्वयं के विकास से संबंधित लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायता हेतु भी परामर्श आवश्यक होता है।